THE NARRATIVE

The Ethnic Cleansing of Kashmiri Hindu

वर्ष 1989-90 में कश्मीर घाटी में हुए हिंदुओं के नरसंहार और विस्थापन को लेकर तीन दशकों तक वामपंथी/कम्युनिस्ट धड़े द्वारा भ्रमजाल बुना गया।

फ़िल्म 'द कश्मीर फाइल्स' ने ना केवल इस विभत्स नरसंहार को उजागर किया अपितु उस वामपंथी षड्यंत्र को भी बखूबी बेनकाब किया जिसने हिंदुओं के नरसंहार पर दुष्प्रचार किया है।

द नैरेटिव की टीम का प्रयास 7 भागों की एक विशेष श्रृंखला के माध्यम से इससे जुड़े प्रमुख तथ्यों को आप तक पहुँचाने का रहा, जिसमें इस्लामिक आतंकवाद की क्रूरता, हिंदुओं का पलायन और इस्लामिक-कम्युनिस्ट गठजोड़ का ख़ुलासा किया गया।

भाग - 1 (आतंक के चेहरे)

- वर्ष 1977 में कश्मीर घाटी को हिन्दु विहीन करने के लक्ष्य से स्थापित किए संगठन ''जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट'' अपने स्थापना के कुछ ही वर्षो में घाटी में रह रहे हिंदुओ के लिए आतंक और भय का पर्याय बनकर उभरा

- वर्ष 1988 से 1994 तक के कालखंड में यासीन मलिक और बिट्टा कराटे उर्फ इरफान डार कश्मीर घाटी में इस चरमपंथी इस्लामिक संगठन का चेहरा बनकर उभरे

- 1990 में कश्मीरी हिंदुओ के नरसंहार के दौरान बिट्टा ने अपने करीबी दोस्त सतीश टीकू सहित कुल 42 पंडितों की हत्या की। एक साक्षात्कार के दौरान बिट्टा ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया था कि उसने 20 से अधिक पंडितों को स्वयं गोली मारी है

- वहीं यासीन मलिक इस फ्रंट की कोर टीम ''हेजीब'' का हिस्सा था, जिसने पाकिस्तान में प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत घाटी में हिंदुओ के नरसंहार की अगुवाई की

- यासीन मलिक को 25 जनवरी 1990 को बस की प्रतीक्षा कर रहे भारतीय वायु सेना के चार अधिकारियों की हत्या का मुख्य आरोपी माना जाता है

- बावजूद इसके कांग्रेस की सरकार में वर्ष 2005-06 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा यासीन को नई दिल्ली बुलाकर सम्मानित भी किया गया था

भाग - 2 (द मैसेज) संदेश देने का प्रयास

- कश्मीर घाटी में पनपते उन्मादी जिहाद ने वरिष्ट वकील, लोकप्रिय जन नेता एवं उस दौर में घाटी से आने वाले भाजपा के बड़े नेता टीकालाल टपलू को अपना पहला शिकार बनाया था

- टीकालाल टपलू घाटी में बेहद लोकप्रिय थे, उदार हृदय के टपलू को स्थानीय लोग लालाजी कहकर बुलाते थे हालांकि अपनी लोकप्रियता और गौरान्वित हिन्दू होने के कारण वो घाटी के मुस्लिम चरमपंथियों के निशाने पर थे

- 14 सितंबर 1989 को सुबह न्यायालय जाने के दौरान तीन कट्टरपंथियों ने उन्हें घेरकर ताबड़तोड़ 8 गोलियां मार कर हत्या कर दी

- लालाजी टपलू की अंतिम यात्रा में हजारों का जनसैलाब उमड़ा घाटी में हिन्दू समुदाय में शोक की लहर थी

- हालांकि टपलू की हत्या को अभी 6 सप्ताह भी नहीं गुजरे थे कि घाटी एक बार फिर तब दहल उठी जब महाराजा बाज़ार में दिनदहाड़े उच्च न्यायालय के न्यायाधीश नीलकंठ गंजु को गोलियों से छलनी कर दिया गया

- चरमपंथियों का भय ऐसा की उच्च न्यायालय के न्यायाधीश का शव दो घंटे तक सड़क पर बेजान पड़ा रहा पर किसी ने उसे छूने की हिम्मत ना जुटाई

- 6 हफ्तों के भीतर हुई इस दूसरी हत्या ने घाटी के हिन्दू समुदाय को स्पष्ट संदेश दिया था घाटी में मातम पसरा था हर ओर खामोशी थी पर ये केवल तूफान के पहले की खामोशी थी

भाग - 3 (राजनीतिक बिसात)

- कश्मीर घाटी में हिंदुओं के विरुद्ध पनप रहे इस्लामिक जिहाद को फलने फूलने में राजनीतिक शक्तियों की भी स्पष्ट संलिप्तता थी, यह केवल संयोग नहीं कि विस्थापन के समय देश के गृहमंत्री मुफ़्ती मोहम्मद सईद थे जिनकी बेटी के कथित अपहरण के एवज में आतंकियों को छोड़ना पड़ा था

- वर्ष 1984 से 1989 तक के कालखंड में कश्मीर के राज्यपाल रहे जगमो. हन ने केंद्र में कांग्रेस की सरकार एवं राज्य की अब्दुल्ला सरकार को घाटी में पनप रहे उन्माद के विषय मे कई बार अपनी चिंताओ से अवगत कराया था बावजूद इसके इस विषय पर केंद्र और राज्य की सरकारों ने चुप्पी साधे रखी

- नई दिल्ली की राजीव गांधी की सरकार ने तो इस विषय पर यहां तक कह दिया था कि हम पंडितों की समस्या को लेकर श्रीनगर में अपने मित्र (फारूक अब्दुल्ला) को नाराज नहीं कर सकते

- राज्य की अब्दुल्ला सरकार की भूमिका तो इस पूरे नरसंहार में और भी संदिग्ध रही, मुख्यमंत्री रहने के दौरान फारूक अब्दुल्ला ने ना केवल ये सुनिश्चित किया कि घाटी में हिंदुओ के विरुद्ध हो रही हिंसा पर जिहादियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही ना हो अपितु घाटी में हिंदुओ की अंतिम उम्मीद रहे जगमोहन को दिल्ली वापस बुलाए जाने में भी उनकी अहम भूमिका रही

- यहां तक कि विस्थापन के ठीक पहले तक फारूक मुख्यमंत्री के रूप में बने रहे और विस्थापन के ठीक एक दिन पहले ही वो त्यागपत्र देकर लंदन भाग गएविस्थापन के उपरांत भी दुबारा मुख्यमंत्री बने फारूक अब्दुल्ला ने यह सुनिश्चित किया कि हिंदुओ की भूमि कौड़ियों के दाम पर बेची जाए

भाग - 4 The Slogans of Jehad (जिहाद के नारे)

- 1989-90 के दौर में घाटी की मस्जिदों से दिए जाने वाले नारों और तकरीरों ने हिंदुओ के विरुद्ध जहर घोलने में प्रमुख भूमिका निभाई

जमात-ए- इस्लामी की देख रेख में घाटी की मस्जिदों पर वहाबियों का कब्जा था जिनके लिए कश्मीरी हिन्दू ''काफिर या मुशरिक'' थे

- विस्थापन के पहले से ही कश्मीर की सैकड़ो मस्जिदें जिहादियों की शरणस्थली बन चुकी थी जहां कश्मीरी हिंदुओ के नरसंहार की पृष्ठभूमि रची गई

- जनवरी 1990 में मस्जिदों से सार्वजनिक रूप से ये एलान होने लगा कि कश्मीर में निजाम-ए-मुस्तफा चलेगा

- इस क्रम में रलीव, गलिव, या चलिव के नारे दिए गए अर्थात अपना धर्म बदलो, मारे जाओ या भाग जाओ

विस्थापन से एक रात पहले नारे दिए गए कि ष्असी गछि पाकिस्तान
बताओ रोअस बतानेव सनष् मतलब हम घाटी को पाकिस्तान बनाएंगे तुम्हारे साथ नहीं तुम्हारी औरतों के साथ

- ये नारा अंतिम चेतावनी साबित हुआ जिसके उपरांत लाचार शासन तंत्र में जिहादियों से अपनी महिलाओं की अस्मत बचाने को कश्मीरी हिन्दू समुदाय ने विस्थापन किया

भाग - 5 The Exodus (19 जनवरी की वो काली रात)

- घाटी में 19 जनवरी की सर्द रात में औपचारिक रूप से कोई सरकार नहीं थी, तत्कालीन मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला एक दिन पहले त्यागपत्र देकर लंदन भाग गए थे

- कश्मीरी हिंदुओं के अनुसार घाटी की हवा में ही जैसे हिन्दू विरोध का जहर घुल चुका था और ऐसा लग रहा था किसी भी पल कश्मीर के पाकिस्तान में विलय की घोषणा हो सकती है

- शाम होते ही मस्जिदों से आने वाली आवाजे तेज़ हो गई, मस्जिदों से कश्मीरी हिंदुओं पुरुषों को घाटी छोड़ने के लिए कहा जा रहा था और मुस्लिमों से सड़कों पर उतरने के लिए कहा जा रहा था

- रात होते होते उन्मादी भीड़ सड़को पे थी पूरी रात हिंदुओ के घरों के बाहर नारे लगते रहे, लोगों की नृसंश हत्याएं हो रही थी, औरतों के साथ बलात्कर हुए

- अगली सुबह जब दहशत और आतंक की वो काली रात खत्म हुई तो घाटी के प्रत्येक हिन्दू घर पे एक पर्चा चस्पा हुआ था जिसमे हिंदुओ को घाटी छोड़ने या फिर मरने के लिए तैयार रहने को कहा गया था

- लाखो हिंदुओं ने नम आंखों से अपनी मातृभूमि छोड़ी, ये घाटी से हिंदुओं के सातवें विस्थापन का प्रारंभ था जो आने वाले कई वर्षो तक जारी रहने वाला था

भाग - 6 The Insufferable (विस्थापन का दंश)

- घाटी में 19 जनवरी 1990 की रात को जो हुआ वो हिंदुओं के लिए सबकुछ बर्बाद करने वाली घटना थी
- अगली सुबह से प्रारंभ हुआ हिंदुओ का विस्थापन जत्थों में कई महीनों तक जारी रहा
- बर्फ की पहाड़ियों से घिरे बगानों और घरों में रहने वाले लोग जम्मू की लू में जल रहे थे
- होनहार बच्चों जीविका के लिए मजदूरी को बाध्य थे और छात्राएं सिलाई मशीनें चलाने को
- जिनके पास हवेलियां थी वो टेंटो में रातें बिता रहे थे और जिनके पास सेबों के बागान थे वो जंगलो में बिछुओं के बीच रहने को बाध्य किए गए थे

- अपनी ही मातृभूमि पर ये स्थिति अकल्पनीय थी मानवीय संवेदनाओं को झकझोर ने वाली थी लेकिन विडंबना यह रही कि उस भयानक त्रासदी का दंश झेल रहे हिंदुओं की सुध लेने वाला कोई नहीं था
- कश्मीरी विस्थापित हिन्दू कहते हैं कि उन परिस्थितियों में अगर संघ और तात्कालिन राज्यपाल जगमोहन ने सहायता नहीं कि होती तो वे वहां जीते जी मॉर्क दिए जाते

भाग - 7 Lest we forget (अविस्मरणीय वंधामा नरसंहार)

- कश्मीर घाटी से हिंदुओं के विस्थापन के उपरांत कुछ ऐसे हिन्दू परिवार भी थे जो नरसंहार की त्रासदी और दहशत के उपरांत भी अपनी मातृभूमि को छोड़ने के लिए तैयार नही थे

- आने वाले कुछ वर्षो में उन्मादी जिहादी भेड़ियों ने इन्हें लक्षित कर के इस्लामिक चरमपंथ का शिकार बनाया
- इसी क्रम में 25 जनवरी 1998 को श्रीनगर से 28 किलोमीटर दूर गांदेरबल के वंधामा गांव में
- इस्लामिक आतंकियों ने सेना की वर्दी में हमला बोला
- गांव में उस रात कुल 24 हिन्दू थे जिनमें से 23 को ना केवल मारा गया अपितु प्राण निकलने के उपरांत उनके शवों को क्षत-विक्षत भी किया गया महिलाओं और बच्चों के शवों को टुकड़ो में काटा गया
- इस विभत्स नरसंहार का शिकार होने वालों में 4 बच्चे और कुल 10 महिलाएं थी जिनकी बर्बर हत्या कर आतंकियों ने उनके घरों समेत गाओं के मंदिर को आग के हवाले कर दिया

- विडंबना ऐसी की इस हृदयविदारक घटना के उपरांत भी राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला और प्रधानमंत्री आई के गुजराल इसका सामान्यीकरण करते दिखाई दिए
- यह अकल्पनीय बर्बरता थी, जिसे हिन्दू जनमानस के स्मृति से मिटाना कठिन है

भाग - 8 Reoccurrence (पुनरावृति)

- घाटी में कश्मीरी हिंदुओ का नरसंहार और पलायन की शुरुवात वर्ष 1989 में हुई थी हालांकि बड़े पैमाने पर हुए पलायन के उपरांत भी घाटी में बचे मुट्ठी भर हिंदुओ को लक्षित कर के मारे जाने का क्रम निरंतर जारी रहा

- इस क्रम में वंधामा जैसे नरसंहारों की पुनरावृत्ति से घाटी में बचे खुचे हिन्दू परिवारों को यह संदेश दिया गया कि जब तक घाटी में एक भी हिन्दू/काफिर रह रहा है ये जिहाद जारी रहेगा

- हालांकि कश्मीर में इस उन्मादी जिहाद का शिकार होने वाले हिन्दू अकेले नहीं थे अपितु जिहादियों के निशाने पर सिख बंधु भी थे

- 20 मार्च की रात श्रीनगर से तकरिबन 70 किलोमीटर दूर अनंतनाग के छतसिंहपुरा गांव में जिहादी आतंकियों ने सिख भाइयों के रक्त से होली खेली, हमलावरों में समीप के गांव के हमलावर भी शामिल थे

- इस विभत्स नरसंहार में कुल 36 सिखों को घाटी में सिख होने की सजा दी गई

- इस घटना के ठीक तीन वर्ष के उपरांत 23 मार्च 2003 को पुलवामा के नादिमार्ग गांव में जिहादी आतंकियों ने 24 कश्मीरी हिंदुवो का सुनियोजित नरसंहार किया, मरने वालों में 2 वर्ष के एक बच्चे से लेकर 65 वर्ष की एक वयोवृद्ध महिला भी थी

- सबकुछ इतना सुनियोजित था कि हिंदुओं की सुरक्षा में तैनात 30 सिपाहियों में से उस रात केवल 5 ही उपस्थित थे, संदेश स्पष्ट था

- घाटी में यह क्रम अब भी जारी है इसका एक उदाहरण पिछले वर्ष अक्टूबर में तब देखने को मिला जब स्कूल में घुसे जिहादियों ने हिन्दू शिक्षकों की पहचान कर उनकी बेरहमी से हत्या कर दी

भाग - 9 The Leftist Fallacy (वामपंथी भ्रम)

- कट्टरपंथियों द्वारा वर्ष 1989-90 में घाटी में हिंदुओं के नरसंहार की पुनरावृत्ति अगले दो दशकों तक समय अंतराल पर दुहराई जाती रही
- फलस्वरूप ऐतिहासिक रूप से कभी हिन्दू बहुसंख्यक रही घाटी पूर्णतया हिन्दुविहीन हो गई
- हालांकि जितनी बड़ी त्रासदी के शिकार कश्मीरी हिंदु घाटी से विस्थापन के समय हुए उससे कहीं ज्यादा पीड़ादायक उनके लिए उनके साथ हुए नरसंहार पर फैलाया गया वामपंथी दुष्प्रचार रहा
- वामी-इस्लामी गठजोड़ को मूल में रख कर वामपंथी लेखकों, पत्रकारों, शिक्षकों एवं कथित बुद्धिजीवियों ने तीन दशकों तक विशुद्ध रूप से धार्मिक आधार पर किए गए कश्मीरी हिंदुओ के नरसंहार पर भ्रम की स्थिति बनाए रखी

- विडंबना ऐसी की अपने ही देश में तीन दशकों से विस्थापन का जीवन जीने के लिए बाध्य किए गए समुदाय को विस्थापन के लिए स्वयं ही उत्तरदायी ठहराया गया
- बेशर्मी ऐसी कि जिन जिहादियों ने मासूम हिन्दू बच्चीयों के साथ दरिंदगी की उन्हें ही पीड़ित बता कर पूरी दुनिया में कश्मीर पर भ्रम फैलाया गया
- वास्तविकता में तो इस नरसंहार और विस्थापन के लिए जितनी दोषी कट्टरपंथी जिहादी मानसिकता रही उतनी ही दोषी उस पर भ्रम फैलाने वाली जहरीली वामपंथी विचारधारा भी रही जो यह सुनिश्चित कर के बैठी थी कि सच कभी सामने आ ही ना सके

भाग - 10 The Rehabilitation (वापसी की राह)

- इसमें संशय नहीं कि तीन दशकों के उपरांत ही सही कश्मीरी हिंदुओं के साथ घाटी में घटी त्रासदी को लेकर जनमानस में नव चेतना का जागरण हुआ है

- वर्षों तक सच को छुपाने के लिए फैलाए गए वामपंथी भ्रम की मोटी परत अब धुंधली होती दिखाई दे रही है

- घाटी में जिहादियों के कवच स्वरूप काम कर रही धारा 370 को हटाए जाने से भी वर्षों से चली आ रही भेदभावपूर्ण व्यवस्था को तिलांजलि दे दी गयी है

- हालांकि जहां तक घाटी में कश्मीरी हिंदुओं की वापसी का प्रश्न है तो उनकी वापसी से पूर्व यह सुनिश्चित करना होगा कि जो उनके साथ हुआ उसे पहले मुखर रूप से स्वीकार किया जाए

- उनकी नृशंश हत्याएं करने वाले, उनकी महिलाओं, बच्चीयों की अस्मत लूटने वालों दरिंदो को न्यायालय से यथोचित दंड मिल सके, ताकि दशकों के उपरांत ही सही वो घाटी में अपने मान-सम्मान के साथ लौट सकें

- जब तक यह हो नहीं जाता तब तक मार्तण्ड का सूर्य अस्त ही रहने वाला है